भक्तामर स्तोत्र

रचयिता – श्रमणाचार्य विमर्शसागर

श्री भक्तामर स्तोत्र महान, रचा गुरु मानतुंग ने जान
भक्ति जब हृदय समाई है।
आदि विधाता आदिनाथ की महिमा गाई है।
भक्तामर नत मुकुटमणि की, महाकांति के भासक
अंतर पाप सघनतम निर्मल ज्ञानज्योति से नाशक
भवसागर में गिरते जन, चरण द्वय उनको आलम्बन
आदि युग रीति बताई है SS
आदिब्रह्म की छवि हमारे हृदय समाई है॥1॥
चरण में वंदन है-चरण रज चंदन है-2

द्वादशांग के ज्ञाता सुरगुरु तव गुण संस्तुति गावें,
त्रिभुवन के भवि जीवों का संस्तुति गा चित्त लुभावें,
ऐसे चतुर बुद्धि के देव, नाथ! करते चरणों की सेव
करूँगा मैं भी इन्द्र समान SS
प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ तव संस्तुति निश्चय मान॥2॥
चरण में वंदन है-चरण रज चंदन है-2

पादपीठ जो इन्द्र महर्द्धिक देवों से भी पूजित,
करूँ लाज तज संस्तुति में मतिहीन भक्ति से पूरित
कहता नहीं कोई मतिमान, शीघ्र ही होकर के गतिमान

नाथ! यह जो अविचारी है SS
बालक जल में चाँद पकड़वे क्रिया हमारी है।।3।।
चरण में वंदन है-चरण रज चंदन है-2

चंद्रकांति सम उज्ज्वल गुण कहने को हे गुणसागर!
सुरगुरु नहीं समर्थ, कौन फिर पुरुष समर्थ यहाँ पर?
होवे प्रलय काल का जोर, पवन का शोर महाघनघोर
मच्छ से पूरित जलधि अपार SS
कौन भुजाओं से समर्थ जो करे तैरकर पार?।।4।।
चरण में वंदन है-चरण रज चंदन है-2

हे मुनीश! हूँ बुद्धिहीन मुझमें न कोई शक्ति
संस्तुति को तैयार हुआ कारण है तेरी भक्ति
हिरणिया करती नहीं विचार, शक्ति से हीन किन्तु तैयार
सिंह से भय नहिं खाती है SS
निजशिशु रक्षा हेतु प्रीतिवश रण में जाती है।।5।।
चरण में वंदन है-चरण रज चंदन है-2

विज्ञजनों का हासपात्र हूँ अल्पज्ञान का धारी
संस्तुति हेतु बलात् मुखर करती प्रभु भक्ति तुम्हारी
दुल्हनियाँ सी ऋतु सजी बसंत, कोयलिया हर्षित हो अत्यंत
करे कुहु कुहु का उच्चारण SS
सुन्दर आम्रमंजरी का समुदाय एक कारण।।6।।

चरण में वंदन है-चरण रज चंदन है-2

ज्यों सब लोक व्याप्त रजनी का भौंरे सा तम काला
रवि की किरण मात्र ने पल में छिन्न-भिन्न कर डाला
आपकी संस्तुति से हे नाथ! देहधारी जीवों के साथ
आठ अघकर्म बँधे भारी SS
क्षय हो जाते क्षण भर में जो भव सन्तति धारी।।7।।
चरण में वंदन है-चरण रज चंदन है-2

किया जा रहा शुरू तव स्तवन अल्पबुद्धि के द्वारा
चित्त हरे सज्जनों का इसमें एक प्रभाव तुम्हारा
कमलिनी दल पर जैसे जल, दिखाई देता मुक्ताफल
कान्ति मुक्ता की अति प्यारी SS
जल का नहीं प्रभाव कमलिनी दल का ही भारी।।8।।
चरण में वंदन है-चरण रज चंदन है-2

दूर रहे स्तोत्र आपका, सर्व दोषगत पावन
नाथ! आपकी नामकथा ही है समर्थ अघनाशन
दूर रहने पर भी आफताब, सरोवर में अपने ही आप
कमल विकसित हो जाते हैं SS
रवि की प्रभा मात्र का यह अतिशय जन गाते हैं।।9।।
चरण में वंदन है-चरण रज चंदन है-2

हे जगभूषण! जगन्नाथ! जो तव गुण संस्तुति गाते

इसमें क्या आश्चर्य अगर वह तुम समान हो जाते?
लाभ क्या उस स्वामी से नाथ?आश्रित सेवक रहे अनाथ
लोक में जो वैभव धारी SS
निज सम करने वाला स्वामी है आश्रयकारी॥10॥
चरण में वंदन है-चरण रज चंदन है-2

देख आपकी वीतरागता पलक नहीं झुक पाते,
अन्य देव को देख कभी, सन्तोष नहीं कर पाते।
चन्द्रमा जैसी कान्ति विमल, क्षीर सागर का मीठा जल,
जो पीकर प्यास बुझायेगा SS
लवण सिंधु का जल फिर क्या वह पीना चाहेगा?॥11॥
चरण में वंदन है-चरण रज चंदन है-2

वीतरागमय आभा के परमाणु धरा पर जितने
सभी आप में हुए समाहित, वह भी थे उतने
न कोई तुमसा देव महान, सभी हैं राग द्वेष की खान
आपकी छवि अति प्यारी है SS
तीन लोक की सुन्दरता भी तुमने हारी है॥12॥
चरण में वंदन है-चरण रज चंदन है-2

कहाँ चाँद का बिम्ब लोक में जो सकलंक कहाता
होता ढाकपत्र सम निष्प्रभ दिनकर जब आ जाता

आपका अतिसुन्दर आनन, लगे सबको अति मनभावन
उरग सुर नर लोचन हारी ऽऽ
जीत लिए हैं अखिल विश्व के सब उपमाधारी॥13॥
चरण में वंदन है-चरण रज चंदन है-2

नाथ! आपके उज्ज्वल गुण करते त्रिलोक उल्लंघित
पूनम के सम्पूर्ण चाँद की शोभा से अतिशोभित
जिसके आप एक आधार, विचरते वे इच्छा अनुसार
रोकने का किसको अधिकार ऽऽ
नाथ! आपकी तीन लोक में महिमा अपरम्पार॥14॥
चरण में वंदन है-चरण रज चंदन है-2

स्वर्ग अप्सरा चित्त लुभाने हेतु धरा पर आईं
इसमें क्या आश्चर्य?आपको तनिक डिगा न पाईं
प्रलय की चलती महाबयार, मचा हो जग में हाहाकार
शिखर क्या गिरि तक हिल जाते ऽऽ
क्या सुमेरू का शिखर कभी तूफान हिला पाते?॥15॥
चरण में वंदन है-चरण रज चंदन है-2

धूमवर्तिका नेह रहित फिर भी त्रयलोक प्रकाशी
प्रलय वायु भी बुझा सकी न हे अखण्ड! अविनाशी!
प्रकाशित रहते हो दिनरात, अपूरब दीप आप हे नाथ!

मिटा दी जग की अंधियारी ऽऽ
कहलाते हो जगत्प्रकाशक परम ज्योति धारी॥16॥
चरण में वंदन है-चरण रज चंदन है-2

अस्त न होते आप सूर्य सम राहु नहीं ग्रस पाता
तेरा महाप्रभाव श्याम मेघों से न छिप पाता
सूर्य से भी अति महिमावान, आपका निर्मल केवलज्ञान
जो लोकालोक प्रकाशी है ऽऽ
हे मुनीन्द्र! मन तेरा संस्तुति का अभिलाषी है।17॥
चरण में वंदन है-चरण रज चंदन है-2

मोह महातम दलने वाला सदा उदित रहता
करता त्रिजग प्रकाश राहु न बादल से दबता
मुखकमल अतिशय आभावान, अनुपम इन्दु बिम्ब समान
स्वच्छ निर्मल अविकारी है ऽऽ
नाथ! आपसा बन जाऊँ, भावना हमारी है॥18॥
चरण में वंदन है-चरण रज चंदन है-2

नाथ! आपका मुख शशि जब सम्पूर्ण तिमिर का नाशक
तब दिन में रवि, रजनी में शशि क्या हो आवश्यक?
धान पक चुका खेत अभिराम, नाथ! मेघों का फिर क्या काम?
नीर लादे विनम्र भारी ऽऽ

तू किसान मैं धान तुँ ही रक्षा का अधिकारी॥19॥
चरण में वंदन है-चरण रज चंदन है-2

पूर्ण शुद्धतम ज्ञान आप में जैसा नाथ! सुशोभित
हरिहरादि देवों में वैसा कभी उदित न शोभित
महामणियों का विमल प्रकाश, स्वयं ज्योतिर्मय शुभ्र उजास
क्या कभी काँच खण्ड पाता? SS
स्वयं नहीं, जो रवि किरणों से झिलमिल हो जाता॥20॥
चरण में वंदन है-चरण रज चंदन है-2

हरिहरादि देवों का दर्शन भी मैं उत्तम मानूँ
उन्हें देखने से मन तुझमें ही संतोषित जानूँ
आपके दर्शन से क्या नाथ?आपका ही चाहे मन साथ
आपकी ही नित पूजा है SS
चित्त लुभाये भूमण्डल पर देव न दूजा है॥21॥
चरण में वंदन है-चरण रज चंदन है-2

सौ-सौ नारी सौ-सौ सुत की बनी प्रसूता जननी
तुम सा सुत क्या जन्म सकी कोई माता इस अवनी?
दिशायें सभी करें धारण, शुभ्र ज्योतिर्मय तारागण
किन्तु दैदीप्यकिरण वाला SS
सूर्य उदित होता प्राची से करने उजियाला॥22॥

चरण में वंदन है-चरण रज चंदन है-2

दिनकर सम तेजस्वी निर्मल मोह तिमिर के नाशक
हे मुनीन्द्र! पुरुषोत्तम! ऐसा मानें मुनिजन श्रावक
पाकर नाथ! आपको पास, करें मृत्युंजय कर्म विनाश
मुक्ति के होते अधिकारी ऽऽ
किन्तु आप बिन मार्ग न कोई आतम हितकारी।।23।।

चरण में वंदन है-चरण रज चंदन है-2

नाथ आपको विभु! योगीश्वर! विदितयोग! अविनाशी!
आदि! अनन्त! असंख्य! अचिन्त्य! अनंगकेतु! ब्रह्मा भी।
निर्मल! ज्ञानस्वरूप! अनेक! आपको कहता कोई एक
ईश! इत्यादिक नामों से ऽऽ
गणधर आदि सन्त पुकारें निर्मल भावों से।।24।।

चरण में वंदन है-चरण रज चंदन है-2

केवलज्ञानी आप अतः हो बुद्ध! विबुध से पूजित
नाथ! आप ही हो शंकर! करते त्रिलोक सुख पूरित
शिवपथ विधि विधान से धीर, आप ही ब्रह्मा हो हे वीर!
न कोई अवनी पर उत्तम? ऽऽ
व्यक्त किया निज शिव स्वरूप प्रभु तुम ही पुरुषोत्तम।।25।।

चरण में वंदन है-चरण रज चंदन है-2

त्रिभुवन की पीड़ा हरने वाले प्रभु! तुम्हें नमन हो

भूमण्डल के निर्मल भूषण हे विभु! तुम्हें नमन हो
आप अखिलेश जगत के नाथ, आप बिन तीनों लोक अनाथ
नमन स्वीकारो बारम्बार SS
हे भवसिन्धु सुखाने वाले! तुम्हें नमन शतबार।।26।।
चरण में वंदन है-चरण रज चंदन है-2

हे मुनीश! यदि सर्वगुणों ने लिया आपका आश्रय
इसमें क्या आश्चर्य? लोक में तुमसा नहीं उपाश्रय
दोष भी अहंकार में चूर, स्वप्न में भी प्रभु तुमसे दूर
आपका दर्श नहीं पाते SS
रागी-द्वेषी देवों में आश्रय पा इठलाते ।।27।
चरण में वंदन है-चरण रज चंदन है-2

उन्नत तरु अशोक के आश्रित कंचन सा तन शोभित
विमल ऊर्ध्व किरणें फैलाकर करता जन-मन मोहित
उज्ज्वल दीप्ति रश्मिवाला, मिटाता तम अतिशय काला
बादलों के समीप आकर SS
शोभित जैसे दिनकर नभ में किरणें फैलाकर।।28।।
चरण में वंदन है-चरण रज चंदन है-2

मणि किरणों के अग्रभाग से शोभित है सिंहासन
नाथ! आपका उस पर कंचन सा परमौदारिक तन

होता शोभित उसी प्रकार, तुंग उदयाचल शिखर मँझार
अतुल सौन्दर्य विहँसता हो SS
नभ में रश्मि फैलाकर आदित्य दमकता हो॥29॥
चरण में वंदन है-चरण रज चंदन है-2

नाथ! आपकी कंचन जैसी कांतिमान यह काया
कुन्दपुष्प सम श्वेत चँवर ढुरते नित सुर के द्वारा
हो कनकाचल का तुंग शिखर, ज्योत्सना का झर-झर निर्झर
बह रहा हो मानो भारी SS
कंचन तन पर चँवर सुशोभित सुन्दर मनहारी॥30॥
चरण में वंदन है-चरण रज चंदन है-2

हे विभु! समवशरण में सिर पर तीन छत्र हैं मंगल
मुक्ता की झालर से शोभित चन्द्रकांति सम उज्ज्वल
रवि किरणों का प्रखर प्रताप, रोकते हैं जो अपने आप
सुयश जग को बतलाते हैं SS
त्रिभुवन के परमेश्वर हो यह प्रगट दिखाते हैं॥31॥
चरण में वंदन है-चरण रज चंदन है-2

तीन लोक के जीवों को सत्संग कराने वाला
हो सद्धर्मराज की जय, जयघोष लगाने वाला
नभ में बजता दुन्दुभि नाद, चलो प्रभु शरणा तजो प्रमाद

प्रगट करता प्रभु यश मंगल SS
मधुर गूढ़ उन्नत स्वर से पूरित है दिग्मंडल॥32॥
चरण में वंदन है-चरण रज चंदन है-2

पारिजात मन्दार नमेरु सन्तानक वा सुन्दर कल्पवृक्ष के सुरभित सुमनों की वर्षा मनहर साथ बहती शुभ मन्द बयार, सुगंधित जलवृष्टि सुखकार
मिटाने भवि की भव ज्वाला SS
मानो नभ से उतर रही प्रभु वचनों की माला॥33॥
चरण में वंदन है-चरण रज चंदन है-2

जग के चमकीले पदार्थ हो कांतिहीन शरमाते नाथ! आपके भामण्डल की आभा में खो जाते करोड़ों सूर्य उदित हों साथ, आपकी तन द्युति ऐसी नाथ
चन्द्रमा से भी अति शीतल SS
जीत रहा है रजनी को भी तव तन भामण्डल॥34॥
चरण में वंदन है-चरण रज चंदन है-2

त्रिभुवन को सद्धर्मतत्त्व का अर्थ विशद बतलाती भविजन को जो इष्ट स्वर्ग-अपवर्ग मार्ग दिखलाती ऐसी दिव्यध्वनि तव नाथ, सदा चाहूँ भव-भव में साथ
द्रव्य-गुण-पर्यय धारी है SS

महा लघु सब भाषा में परिणमन स्वभावी है॥35॥
चरण में वंदन है-चरण रज चंदन है-2

विकसित स्वर्णाभामय नूतन कमल पुञ्ज हों जैसे
फैल रही चहुँ आभा जिनकी कान्तिमान नख ऐसे
भवि जीवों का पुण्यप्रताप, गमन होता है अपने आप
जहाँ प्रभु!कदम आप रखते SS
दो सौ पच्चिस स्वर्णकमल सुर चरण तले रचते॥36॥
चरण में वंदन है-चरण रज चंदन है-2

इस प्रकार धर्मोपदेश में जो विभूति प्रभु पाई
हरिहरादि देवों में वैसी देती नहीं दिखाई
दमकता हो नभ में मार्तण्ड, हजारों किरणें लिए प्रचण्ड
मिटाती गहन तिमिर, आभा SS
तारागण दैदीप्य किन्तु न दिखती यह आभा॥37॥
चरण में वंदन है-चरण रज चंदन है-2

झर-झर झरते मद से कलुषित चंचल गण्डस्थल हो
भ्रमते भौंरों के गुंजन से बेसुध क्रोध प्रबल हो
ऐरावत सम महाविशाल, आ रहा हो गज मानो काल
भक्त फिर भी ना भय खाता SS
नाथ! आप जब शरणागत के हो आश्रयदाता॥38॥

चरण में वंदन है-चरण रज चंदन है-2

करते अति चिंघाड़ गजों के चीर दिए गण्डस्थल
रक्त सने गजमुक्ता छवि से किया विभूषित भूतल
ऐसा सिंह महाविकराल, भक्त को छू भी सके मजाल
पड़ा हो पंजों बीच भले SS
हे प्रभु! चरणयुगल गिरि का आश्रय ही उन्हें फले॥39॥

चरण में वंदन है-चरण रज चंदन है-2

प्रलयकाल की महावायु से उत्तेजित अग्नि सम
चहुँदिक फिंके फुलिंगे उज्ज्वल करने विश्व भसम
अहो! ऐसी दावाग्नि अपार, मचा हो जग में हाहाकार
शीघ्र होती है स्वयं शमन SS
एक आपके नाम नीर का ही प्रभाव स्वामिन्!॥40॥

चरण में वंदन है-चरण रज चंदन है-2

महाकुपित रक्ताक्ष समद कोकिला कंठ सम काला
डस लेता फुंकार मार विष उगल महाफण वाला
ऐसा नाग महाविकराल, किन्तु कर सके ना बाँका बाल
भक्त भय छोड़ लाँघ जाता SS
नाथ! आपका नाम नागदमनी औषधिदाता॥41॥

चरण में वंदन है-चरण रज चंदन है-2

समर भूमि में शूरवीर नृप अतुल सैन्य बल धारी

गर्जन करते गज अश्वों का हो कोलाहल भारी
छिड़ा हो अति भीषण संग्राम, भक्त प्रभु! जपे आपका नाम
विजय श्री तिलक लगाती है SS
उदित सूर्य की किरण तिमिर को शीघ्र भगाती है॥42॥
चरण में वंदन है-चरण रज चंदन है-2

भालों से बेधित गज, बहती रक्त धार दरिया सम
उतर तैरने आतुर योद्धा शत्रु भार करने कम
जिसने लिया आपका नाम, चरण वन किया नाथ! विश्राम
विजय श्री गले लगाती है SS
अपराजेय शत्रु पर मंगलध्वज फहराती है॥43॥
चरण में वंदन है-चरण रज चंदन है-2

जलती जलधि बीच बड़वानल चलती प्रलय हवायें
क्षुभित भयंकर मगरमच्छ घड़ियाल निगलना चाहें
उठ रही हों लहरें उत्ताल, हुए डगमग जलयान विशाल
भक्त क्षण भर न घबड़ाते SS
नाथ! आपके सुमिरन से तत्काल पार जाते॥44॥
चरण में वंदन है-चरण रज चंदन है-2

महाजलोदर रोग भार से हुआ वक्र तन जिनका
अतिदयनीय दशा उनकी विश्वास नहीं जीवन का

भक्त प्रभु जपे आपका नाम, शीघ्र ही होता रोग विराम
लगा ले पद रज अमृत मान SS
नाथ! चरण रज से होता तन कंचन मदन समान॥45॥
चरण में वंदन है-चरण रज चंदन है-2
नख से शिख तक जंजीरों से कसकर जकड़ दिया तन
लहुलुहान जंघायें घिस-घिस, महाभयानक बन्धन
जपता नाम मन्त्र की जाप, प्रगट हो उसका स्वयं प्रताप
सभी बन्धन खुल जाते हैं SS
तीन लोक के बन्धन भी उससे भय खाते हैं॥46॥
चरण में वंदन है-चरण रज चंदन है-2
महामत्त गजराज, सिंह, दावानल, अहि, संग्राम
जलधि, जलोदर, बन्धन का भय पाता है विश्राम
नाथ! यह है स्तोत्र महान, भक्ति से पढ़ता जो मतिमान
अहा! निर्भय हो जाता है SS
भय भी भयाकुलित होकर फिर पास न आता है॥47॥
चरण में वंदन है-चरण रज चंदन है-2
विविध वर्ण ही पुष्प रम्य, गुणक्यारी से चुन लाये
गूँथा संस्तुति हार भक्ति से, नाथ! अमर गुण गाये
जो भवि करे कण्ठ धारण, रहे फिर क्या वह साधारण?
लोक-परलोक विभव पाये SS
''मानतुंग'' सम-शिवरमणी हो अवश उसे चाहे॥48॥

चरण में वंदन है-चरण रज चंदन है-2
मानतुंग आचार्य ने रचा भक्ति काव्य अति प्यारा
छन्द चुना जो बसन्ततिलका सब छन्दों में न्यारा
जीवन बनता तभी महान, हृदय में हो नित प्रभु गुणगान
अमिट बनती यश गाथा है-SS
आदिनाथ! वृषभेष! आपके चरणों माथा है॥1॥
चरण में वंदन है-चरण रज चंदन है-2
नाथ! आपके समवसरण सी अशोक नगरी पाऊँ
पदपंकज की संस्तुति से तुम सम अशोक बन जाऊँ
हृदय में पलता एक ''विमर्श'' सदा हो भेदज्ञान उत्कर्ष
आत्मज्ञायक स्वभाव पाऊँ
छोड़ शुभाशुभ भाव सभी शुद्धोपयोग धयाऊँ॥2॥
चरण में वंदन है-चरण रज चंदन है-2
मानतुंग की भक्तामर कृति सदियों अमर रहेगी
पढ़े-सुने जो भविक भक्ति से स्वर्ग मोक्षफल देगी
होवे रवि सम केवलज्ञान, बनूँ मैं अहा! सिद्ध भगवान
किया पद्यानुवाद चितधर
''गुरु विराग'' का शुभाशीष ही इसमें हेतु प्रखर॥3॥
चरण में वंदन है-चरण रज चंदन है-2
॥ इतिश्री भक्तामर स्तोत्र ॥